B.A Part III rd History (H) VIth Paper

Date 10/10

Q. सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कारणों एवं परिणामों का वर्णन करें।

Ans:— भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में सविनय अवज्ञा आंदोलन एक महत्वपूर्ण अध्याय है। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भारतीयों का यह महान ऐतिहासिक संघर्ष माना जाता है जो मार्च 1930 ई० में आरम्भ हुआ। इस आन्दोलन का नेतृत्व महात्मा गाँधी ने किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन जन असंतोष के कारण शुरू हुआ और इसके कई महत्वपूर्ण राजनीतिक तथा आर्थिक कारण थे—

राजनीतिक कारण—

(1) नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकृत करना — नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकृत करना राजनीतिक असंतोष का एक महत्वपूर्ण कारण था। इस रिपोर्ट में यह वादा किया गया था कि यदि दिसम्बर 1928 ई० तक सरकार ने इस रिपोर्ट को स्वीकार नहीं किया तो काँग्रेस अहिंसक असहयोग आंदोलन पुनः आरंभ कर देगी तथा इस बार आंदोलन के कार्यक्रम में लगान न देना भी शामिल होगा। इसके अतिरिक्त पूर्ण स्वतंत्रता की माँग को भी ब्रिटिश सरकार के सामने रखा गया।

2) लाहौर अधिवेशन — 1929 ई० में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता की माँग पेश की गई। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहर लाल नेहरू कर रहे थे जिन्होंने कांग्रेस में नया उत्साह भर दिया। इस अधिवेशन में नेहरू रिपोर्ट में घोषित औपनिवेशिक स्वराज्य के लक्ष्य को रद्द कर दिया और यह ऐलान किया गया कि "अब कांग्रेस का लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य होगा।"

नेहरू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि — "आज हमारा सिर्फ एक लक्ष्य है, स्वाधीनता का लक्ष्य, हमारे लिए स्वाधीनता है पूर्ण स्वतंत्रता"

इस अधिनियम के दौरान कांग्रेस पर पुनः गाँधी जी का पूर्ण प्रभाव स्थापित हो गया। अधिवेशन में जितने भी प्रस्ताव पास किए गए उन सबमें गाँधी जी ने स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व करने के बाद जो विचार प्रकट किया था उन का अनुमोदन किया गया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को आदेश दिया गया कि वे भविष्य में काँसिल के चुनाव में भाग न लें और मौजुदा सदस्य अपने पदों से इस्तीफा दे दें।

31 दिसम्बर 1929 ई० की आधी रात को भारतीय स्वतंत्रता का तिरंगा झंडा फहराया गया। इस तरह 1930 ई० की शुरुआत में जहाँ सर जॉन साइमन भारत के लिए संवैधानिक सुधार के प्रस्ताव बनाने में व्यस्त थे तथा ब्रिटिश सरकार गोलमेज सम्मेलन को अंतिम रूप देने में लगी हुई थी वहाँ पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने के उद्देश्य से सविनय अवज्ञा आंदोलन की तैयारियाँ शुरु कर दी।

आर्थिक कारण — देश की आर्थिक स्थिति भी इस आन्दोलन के लिए उत्तरदायी थी। 1929 ई० की विश्व व्यापी आर्थिक मंदी का प्रभाव भारत पर भी पड़ा। आवश्यक वस्तुओं की कीमत बढ़ गई, किसान तथा मजदूर आवश्यक वस्तुओं को खरीदने में असमर्थ थे। ऐसी स्थिति में सरकारी कर, लगान चुकाने में भी असमर्थ थे। आर्थिक मंदी से मजदूरों की हालत और भी बिगड़ गई थी। कल-कारखानों में हड़ताल आम बात हो गई थी। मजदूरों का आन्दोलन देश के विभिन्न भागों में संगठित हो रहा था। मजदूरों के साथ-साथ किसानों में भी आर्थिक असन्तोष व्याप्त था। 1928 ई० में ही बारडोली सत्याग्रह शुरु हो चुका था। इस किसानों तथा मजदूरों के असंतोष के कारण देश में क्रियाशीलता

स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।

मेरठ षड्यंत्र केस में मजदूरों के नेताओं को कैद की सजा दी गयी थी। इससे मजदूरों के बीच वर्ग चेतना जाग्रत हुई और हिंसात्मक आन्दोलन को दबाने के लिए जन सुरक्षा कानून पास की गई। इस प्रकार राजनीतिक तथा आर्थिक कारणों से देश में एक विस्फोटक स्थिति पैदा हो गई और इन परिस्थितियों में भगत सिंह, राजगुरु तथा सुखदेव के खिलाफ पारित मृत्युदण्ड ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ खतरनाक स्थिति उत्पन्न कर दी।

आन्दोलन के सभी कारण मौजूद थे। गाँधी जी के सामने सवाल यह था कि आन्दोलन की शुरुआत किस तरह से हो। गाँधी जी ने जिन कानूनों को दमनकारी माना उन्हें तोड़ने का निश्चय किया। इन कानूनों में नमक कानून भी एक था, इसलिए गाँधी जी ने आन्दोलन की शुरुआत नमक कानून तोड़ कर शुरु की। गाँधी जी के अनुसार नमक कानून गरीब व्यक्ति को भी प्रभावित करता था साथ ही पूर्ण स्वराज्य के लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन का शुरु किया जाना शायद किसानों के समझ में भी ना आता - परन्तु नमक जैसी उपयोगी वस्तु पर कर लगाए जाने के विरोध में किए गए आन्दोलन में किसानों का समर्थन आसानी से प्राप्त किया जा सकता था। गाँधी जी ने यह फैसला किया कि गाँव-गाँव पैदल घूम कर समुद्र तट पर पहुँचेंगे और वहीं नमक कानून तोड़ेंगे। साधारण लोगों को आकर्षित करने का यह आदर्श तरीका था और इससे गाँधी जी के राजनीतिक सूझबूझ का परिचय मिलता है।

आन्दोलन शुरु करने से पहले गाँधी जी ने 2 मार्च 1930 ई० को वायसराय को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने माँग किया था कि भारतीय प्रशासन में अविलम्ब सुधार लागी जाए साथ ही यह

भी चेतावनी दी थी कि यदि ब्रिटिश सरकार ऐसा करने में असमर्थ होगी तो वह 12 मार्च को नमक कानून का उल्लंघन करेंगे।

वायसराय ने जो पत्र का जवाब भेजा था वह काफी असंतोषजनक था। परिणाम स्वरूप गाँधी जी ने 6 अप्रैल के प्रातः काल में समुद्र तट पर पहुँच कर नमक कानून का उल्लंघन किया तथा इसके बाद देश व्यापी सत्याग्रह और अवज्ञा आन्दोलन आरंभ हो गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन जितना शक्तिशाली हो गया था उसका अंग्रेजों ने अनुमान भी नहीं लगाया था। आंदोलन जैसे-जैसे बढ़ता गया वैसे-वैसे दमन चक्र भी तीव्र होता गया। आंदोलन ने कर बन्दी, लगान बंदी, शराब बन्दी, नमक सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह, भाँग, गाँजा और विदेशी कपड़ों के धारण करने पर, सरकारी स्कूलों-कॉलेजों एवं अदालतों का बायकाट असहयोग आदि कई रूप धारण किए, जिससे सरकार ने स्वयं स्वीकार किया था कि सत्याग्रह आन्दोलन पूर्णतः सफल रहा।

परिणाम — सविनय अवज्ञा आन्दोलन के फलस्वरूप क्रांतिकारी राजनीतिक का अन्त हुआ और ब्रिटिश सरकार पर सुधारों को लागू करने के लिए दबाव पड़ा। इसके परिणाम स्वरूप "1935 ई० का भारतीय सुधार अधिनियम" पारित किया गया। इस अधिनियम के अनुसार प्रांतीय स्वायत्तता लागू की गई थी जो स्वशासन के मार्ग में एक महत्वपूर्ण कदम था। इस अधिनियम के द्वारा कांग्रेस ने प्रांतीय चुनाव में भाग लिया और 1937 ई० के चुनाव में अभूतपूर्व विजय प्राप्त की।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सविनय अवज्ञा आन्दोलन — असहयोग आन्दोलन की तुलना में काफी व्यापक था। असहयोग आन्दोलन में जहाँ

धरना, जुलूस इत्यादि पर जोर दिया गया था वहीं कर बन्दी आन्दोलन सविनय अवज्ञा आन्दोलन का महत्वपूर्ण अंग था। साथ ही समर्थन को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि सविनय अवज्ञा आन्दोलन का क्षेत्र काफी व्यापक था। समाज के अधिकांश वर्ग के लोगों ने इस में भाग लिया। यह धारणाएँ सही, परन्तु अपने उद्देश्य से विचलित नहीं हुआ। इसके पीछे जनता की त्याग, निष्ठा और समर्थन था। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह आन्दोलन सफलता के काफी करीब पहुँच गया था।

जैसा कि विद्वानों ने चर्चा करते हुए लिखा है कि "भारतीय अपने दिलो-दिमाग में यह निश्चित कर चुके थे कि उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है।" गाँधी जी ने एक सौम्य तथा निष्क्रिय शब्द को सदियों की तन्द्रा से जगा दिया था। 1930-32 के आन्दोलन से सबक ले कर लोग संघर्ष की अगली दौर की तैयारी में जुट गए।

— X —